Mukt Shabd Journal

UGC CARE LIST GROUP – I JOURNAL

ISSN Number : 2347-3150

Impact Factor : 4.6

Paper Format

Copyright form

Area covered : Multidisciplinary

Acceptance : Blind peer review

Paper Submission : submitmsj@gmail.com

मनोविज्ञान का व्यवहार और अनुभव के साथ अन्योन्याश्रित संबंध

प्रो.बी.एल.जैन

विभागाध्यक्ष,शिक्षा विभाग,

जैन विश्व भारती संस्थान,

लाडनूं,नागौर,राजस्थान-341306

सारांश- मनोविज्ञान को प्रारम्भ में आत्मा का विज्ञान माना जाता था,उसके बाद उसे मन या मस्तिष्क का विज्ञान माना जाने लगा, उसके बाद उसे चेतना का विज्ञान माना जाने लगा, अब उसे व्यवहार का विज्ञान के रूप में माना जाता है। इस प्रकार मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है। मनोविज्ञान में प्राणी के व्यवहार का अध्ययन विविध विधियों से किया जाता है। मनोविज्ञान में अनुभव के आधार पर प्राणी को जाना और समझा जा सकता है। मनोविज्ञान का व्यवहार और अनुभव के साथ घनिष्ठ संबंध है।इस शोध पत्र में व्यवहार और अनुभव के संबंध को व्यापक रूप में विवेचित किया है।

अध्ययन के उद्देश्य---

1. मनोविज्ञान का व्यवहार के साथ अन्योन्याश्रित संबंध।
2. मनोविज्ञान का अनुभव के साथ अन्योन्याश्रित संबंध।

मुख्य शब्द-व्यवहार, चेतन,अर्धचेतन, अचेतन, उद्दीपन, अनुक्रिया, अनुभव।

प्रस्तावना-मनोविज्ञान शब्द का शाब्दिक अर्थ- Psychology शब्द लैटिन भाषा के Psyche+Logosअर्थातआत्मा(Soul) तथाविज्ञान (Study)अर्थात आत्मा का विज्ञान (Study of soul) से बना है।

मनोविज्ञानकाविकास

क्रमसं	**अर्थ में क्रमशः परिवर्तन**	**समय**	**समर्थक**
1	आत्मा का विज्ञान Science of soul	**प्राचीन युग** आरम्भ से15 वी शताब्दी	अरस्तू,प्लेटो,अरिस्टोटल,डेकार्ट
2	मस्तिष्क का विज्ञान Science of mind	**मध्य युग** 16 वी 17 शताब्दी	पोम्पोनाजी
3	चेतना का विज्ञान Science of consciousness	18 वी शताब्दी	विलियम जेम्स,विलियम वुंट,जेम्स सल्ली,वाइव
4	व्यवहार का विज्ञान Science of behaviour	**आधुनिक युग** 20 शताब्दी के आरम्भ	वाट्सन, स्किनर, पवालेव

वुडवर्थ ने कहा था कि "सबसे पहले मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा का त्याग किया, फिर उसने अपने मन या मस्तिष्क का त्याग किया, उसके बाद उसने चेतना का त्याग किया, अब वह व्यवहार की विधि को स्वीकार करता है।"

मनोविज्ञान की परिभाषाएं-

1. गैरिसन व अन्य -"मनोविज्ञान का संबंध प्रत्यक्ष मानव व्यवहार से है।"

2. स्किनर -"मनोविज्ञान, व्यवहार और अनुभव का विज्ञान है।"

3. वाटसन-"मनोविज्ञान व्यवहार का धनात्मक विज्ञान है।"

4. क्रो एंड क्रो-"मनोविज्ञान मानव व्यवहार और मानव संबंधों का अध्ययन है।"

उक्त परिभाषाएं के आधार पर मनोविज्ञान को तीन रूपों में परिभाषित किया जा सकता है-

1.मानसिक प्रक्रियाओं- कोई व्यक्ति यह नहीं देख सकता कि दूसरा व्यक्ति किस तरह सोच रहा है, परंतु हम यह जान सकते हैं कि व्यक्ति ने किस प्रकार सोचा है। उसने किसी पहेली का समाधान कैसे किया है? इस प्रक्रिया में उसके चिंतन को हम समझ सकते हैं। मानसिक प्रक्रिया में व्यक्ति के वाचिक व्यवहार तथा अशाब्दिक संकेतों की सहायता से अनुमान लगाया जाता है।

2.अनुभवों के अध्ययन- जैसे कोई छोटे बालक का मुंह गर्म दूध से जल जाता है, उसे दूध देने पर वह यह देखता है कि यह दूध गरम तो नहीं है क्योंकि गर्म दूध से उसका मुंह जल गया था, अब उसे अनुभव हो गया है कि गर्म दूध नहीं पीना चाहिए। अनुभव किसी भी व्यक्ति की जीवन के क्रियाकलापों तथा उनकी आत्मपरकता का केंद्र होता है। उसके किसी वस्तु या विषय के बारे में कैसा अनुभव है? उसका अध्ययन किया जाता है।

3. व्यवहार का अध्ययन- व्यवहार का निरीक्षण आंखों या यंत्रों की सहायता से किया जाता है, जैसे- व्यक्ति जब पद पर होता है तो उसका व्यवहार अलग होता है और रिटायरमेंट हो जाता है तो उसका व्यवहार अलग हो जाता है। व्यक्ति विभिन्न प्रकार के वातावरण में या परिस्थितियों में अलग-अलग प्रकार का व्यवहार करता है। जब वह किसी समूह का सदस्य बनता है तो उसका अलग व्यवहार हो जाता है।**व्यवहार, चेतन,अर्धचेतन, अचेतन, उद्दीपन, अनुक्रिया, अनुभव**आदि शब्द मनोविज्ञान की परिभाषाओं को सटीक ढंग से समझाने में समर्थ है। मनोविज्ञान का अध्ययन कराने में इन शब्दों की गहराई को बताना आवश्यक है।

1.व्यवहार- परिस्थितियों के प्रति दिखाई गई प्रतिक्रिया व्यवहार है। प्रत्यक्ष व्यवहार दिखाई देता है या अनुभव किया जा सकता है। ज्ञान में भावना नहीं अपितु कर्म है।व्यवहार के अंतर्गत उठना, बैठना, चलना, बोलना आदि क्रियाओं का समुचित विकास करना है। विषय सामग्री मुख्यत: वातावरण में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन है। व्यक्ति के व्यवहार में बहुत जटिल गतिशीलता एवं परिवर्तन की निरंतरता होती है। जिसके कारण अनेक प्रयासों के बाद भी उसके व्यवहार का पूर्णरूपेण सही एवं शुद्ध आकलन संभव नहीं हो पाता। अंत: मनोविज्ञान के अध्ययन उतने यथार्थ नहीं हो सकते जितने की अन्य भौतिक विज्ञान या प्राकृतिक विज्ञानों के होते हैं।जो गुण छात्र में नहीं है, उस गुण को छात्र में शिक्षक विकसित कर देता है तो वह मनोविज्ञान है। अनुभव जिससे परिवर्तन होता है, वह अनुभव है। शिक्षक जन्मजात प्रवृत्तियों में कैसे परिवर्तन लाता है? वातावरण निर्माण से या अनुभव से या कौशल के माध्यम से उसे व्यवहार कहते हैं। व्यवहार में मन की चेतन, अर्द्धचेतन और अचेतन की क्रियाएं परिलक्षित होती है।

मन के तीन भाग-

1.चेतना- जैसे पुस्तक पढ़ने पर पुस्तक पढ़ रहा है। ऐसी अनुभूति मन में होती है। जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से बातचीत करता है और बातचीत के बीच में जो अनुभव और विचार आते हैं, वह चेतना है।जैसे कोई व्यक्ति अच्छी तरह से कार चला लेता है और वह कार के साथ गाने भी सुन लेता है, कार चलाना अब स्वचल प्रक्रिया और उसे कार चलाने में चेतना को इतना ध्यान नहीं देना पड़ता है। चेतना की नियंत्रित प्रक्रिया में उसे काफी ध्यान देना पड़ता है। एकाग्रचित्त होना पड़ता है, इस प्रकार व्यवहार पर चेतना स्वचल और नियंत्रित प्रक्रिया में कार्य करती है। चेतना आंतरिक घटना और बाह्य उद्दीपक का बोध होना है। जैसे दांत पर ब्रुश चला रहा है,उसी समय हम अखबार पढ़ रहे हैं, उसी समय रेडियो भी सुन रहे हैं और उसी समय गैस पर दूध भी गर्म कर रहे हैं। यह चेतना के द्वारा अनेक कार्य किया जाना है।

2. अर्धचेतन-जैसे अलमारी में जब किताब या पेन को नहीं पाते हैं तो थोड़े समय के लिए परेशान हो जाते हैं और कुछ समय सोचने लग जाते हैं और बाद में याद आता है कि पुस्तक अमुक मित्र को दी थी। जब व्यक्ति किताब को भूला नहीं बल्कि चेतन से हटकर वह अवचेतन में चली गई।उसे अर्धचेतन कहते है।

3.अचेतन- जब हम किसी मित्र के घर जाकर कोई वस्तु, पेनया चाबी छोड़ कर आ गए। घर आने पर याद आता है कि अमुक वस्तु रह गई। अब उस मित्र से उन्हें मिलने की इच्छा प्रकट होती है जो अचेतन में चली जाती है। उस समय जब मित्र से मिलने जाता हैं तो चेतना में वे विचार बदलकर व्यक्त होते है। अचेतन भाग बर्फ के टुकड़े के सामान होता है। बर्फ का जो टुकड़ा पानी में डूबा रहता है वह चेतन भाग होता है और जो भाग ऊपर रहता है, वह अचेतन होता है। अचेतन मन में असामाजिक, अनैतिक, घृणित इच्छाएं, दमित इच्छाएं होकर रहती है। ये विभिन्न प्रकार का वेश बदलकर चेतन मन के दैनिक जीवन में व्यक्त होते रहते है। अचेतन की इच्छा में सक्रियता रहती है।दैनिक जीवन में जब व्यक्ति बोलना कुछ चाहता है। ठीक उसके विपरीत बोल देता है। व्यक्ति किसी से मिलने जाता है तो रुमाल, चाबी कुछ सामान भूल कर आ जाता है या किसी सामान को ऐसी जगह रख देता है कि ढूंढने में काफी परेशानी महसूस होती है। ऐसी गलतियां अचेतन की इच्छाओं की पूरी न होने पर होती है। जैसे सम्मोहित रोगी को सम्मोहन अवस्था में यह कहा जाता है कि कल दसबजे आपको अमुक शिक्षक से मिलने जाना है। तो वह ठीक उसी समय उस शिक्षक से मिलने के लिए चला जाता है। कारण पूछने पर कहेगा बस यूं ही चला आया। सम्मोहन के बाद सुझावों का क्रियान्वित होना अचेतन के अस्तित्व के प्रकार कहा जाता है। जब कहीं बाहर जाना होता है तो हम रात्रि में यह निश्चित सोच कर सोते है कि कल हमें प्रातः चार बजे जगना है। नींदकी अवस्था में हमारा चेतन मन तो निष्क्रिय हो जाता है और अचेतन मन सक्रिय हो जाता है। व्यक्ति पूर्णत: निश्चित समय पर उठ जाता है। जब व्यक्ति को एनेस्थीसिया दिया जाता है तो उसकी चेतना शून्य हो जाती है और अचेतन की बातें वह बताना शुरू कर देता है। बड़बड़ाना आदि इस प्रकार की क्रिया अचेतन की क्रियाएं हैं।**उद्दीपन** के प्रति प्राणी के द्वारा की गई **अनुक्रिया** व्यवहार है और **व्यवहार** का वैज्ञानिक अध्ययन ही मनोविज्ञान है।

उद्दीपन-मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है। व्यवहार के अंतर्गत व्यक्ति के द्वारा की गई अन्य क्रियाओं से हम उसके व्यवहार का पता लगा लेते हैं। उद्दीपन के प्रति की गई अनुक्रिया व्यवहार कहलाती है। उद्दीपन वातावरण या परिस्थिति है। अनुक्रिया व्यवहार है। अध्यापक के कक्षा में प्रवेश करने पर कुछ छात्र खड़े हो जाते हैं, कुछ छात्र खड़े नहीं होते हैं और कुछ छात्र असमंजस में रहते हैं कि खड़े हो या नहीं। इस प्रकार की गई अनुक्रिया से शिक्षक छात्रों के व्यवहार का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। किस-किस छात्र में

उसके प्रति मान, सम्मान और आदर है। जैसे बिल्ली को देखकर के चूहा भाग जाता है, कुत्ते को देखकर के बिल्ली भाग जाती है, शेर को देखकर के कुत्ता भाग जाता है। यह सब व्यवहार प्राणी उद्दीपन के कारण कर रहा है। वातावरण या परिस्थिति व्यक्ति को क्रिया के प्रति प्रतिक्रिया करवाते हैं।

अनुक्रिया–मनोविज्ञान में क्रियाओं को अनुक्रिया के रूप में भी अभिहित किया जाता है। जीव द्वारा उद्दीपन के प्रति की गई प्रतिक्रिया को अनुक्रिया कहते हैं। उद्दीपन से जीव के स्नायु मंडल में कुछ परिवर्तन होते हैं तब अनुक्रिया उत्पन्न होती है। अनुक्रिया से परिवर्तन होते हैंजैसे अप्रिय शब्दों को सुनकर क्रोधित होना, यहाँ अप्रिय शब्द उद्दीपन है और क्रोधित होना अनुक्रिया है। चोर पुलिस को देखते ही भाग जाता है। यहां पर चोर उद्दीपन है और भागना अनुक्रिया है। उद्दीपन जीव के सामने प्रस्तुत किया जाता है और जीव उद्दीपन के प्रति अनुक्रिया करता है। प्रत्येक जीव की संरचना अलग–अलग ढंग से बनी होती है और वह अनुक्रिया उसी प्रकार से करता है। जैसे जिसबालक ने रसगुल्ला पहले चख लिया है उसकी अनुभूति अलग होती हैऔर जिस बालक ने रसगुल्ला प्रथम बार खाया है उसकी अनुभूति अलग होती है। गत अनुभूतियों पर भी जीव की अनुक्रिया निर्भर करती है। भूखे कुत्ते की अनुक्रिया अलग होती है और भोजन किए हुए कुत्ते की अनुक्रिया अलग होती है।

2.अनुभव का अध्ययन– जैसे कोई छोटे बालक का मुंह गर्म दूध से जल जाता है, उसे दूध देने पर वह यह देखता है कि यह दूध गरम तो नहीं है। क्योंकि गर्म दूध से उसका मुंह जल गया था। अब उसे अनुभव हो गया है कि गर्म दूध नहीं पीना चाहिए। अनुभव किसी भी व्यक्ति की जीवन के क्रियाकलापों तथा उनकी आत्मपरकता का केंद्र होता है। उसके किसी वस्तु या विषय के बारे में कैसा अनुभव है? उसका अध्ययन किया जाता है। अनुभव हमें अतीत के विचारों से जोड़ता है। अनुभव प्राप्त व्यक्ति समस्याओं का समाधान आसानी से कर लेता है, जैसे गर्म दूध से हाथ जल जाने पर बालक पुन: दूध के गिलास को हाथ लगा कर के देख लेता है और गरम नहीं होने पर वह दूध को पीता है। क्योंकि बालक को यह अनुभव हो गया था कि पहले गर्म दूध पीने पर उसका मुंह जल गया था। किसी बालक का दीपक की लौ में हाथ जल जाने पर उसे पीड़ा होती है और पीड़ा होने के कारण उसे अनुभव हो जाता है कि जलते हुए दीपक की लौ में हाथ नहीं देना चाहिए। अनुभव के कारण हम पहेलियों को सुलझा पाते हैं। अनुभव प्राप्त बालक अपने पूर्व अध्ययन किए हुए विद्यालय के विषय में अपनी अनुभूतियों को बता देता है। जब कहीं शैक्षिक भ्रमण पर जाते हैं तो उसके बाद कोई पूछता हैं कि आपको कैसा अनुभव हुआ और वह व्यक्ति अपने अनुभवों को बताता है। उन अनुभवों के माध्यम से उस व्यक्ति के बारे में यह अध्ययन कर लेते हैं कि उसे कैसा महसूस हुआ है।अनुभव हमें व्यक्ति के अंदर की अनुभूतियों का ज्ञान प्रदान करता है।अत: मनोविज्ञान का व्यवहार के साथ अनुभव से भी अन्योन्याश्रित संबंध है।

निष्कर्ष–मनोविज्ञान मानव व्यवहार का विज्ञान है। व्यवहार शब्द व्यापक रूप में प्रयोग किया जाता है जैसे उसका उठने–बैठने का तरीका ठीक नहीं है, उसका बोलने का तरीका नहीं आता है, वह हमेशा गुस्सा करता है आदि वाक्य में प्रयुक्त क्रियाएँ व्यवहार है। ये क्रियाएँ केवल मानव के व्यवहार में ही नहीं पायी जाती अपितु सभी जीवधारियों के व्यवहार में परिलक्षित होती है। मनोविज्ञान में इन व्यवहार संबंधी तथ्यों का अध्ययन किया जाता है। व्यवहार का क्रमबद्ध, व्यवस्थित तथा सुनियोजित ढंग से अध्ययन किया जाता है। अन्य वैज्ञानिक विषयों की तरह मनोविज्ञान में अवलोकन, निरीक्षण, परीक्षण तथा प्रयोग आदि किए जाते हैं। इसलिए मनोविज्ञान का स्वरूप विज्ञान के रूप में भी स्वीकार किया है। अपने बारे में,दूसरों के बारे में और वातावरण के बारे में जानकारी प्राप्त करना व्यवहार का अध्ययन है, इसी व्यवहार के अध्ययन को मनोविज्ञान के नाम से अभिहित किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. यादव,सियाराम (2008).अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
2. वर्मा, प्रीति, श्रीवास्तव डी.एन. (2008).आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
3. भटनागर, सुरेश (2008).शिक्षा मनोविज्ञान तथा शिक्षण शास्त्र, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
4. शर्मा, जे.डी. (2008).मनोविज्ञान की पद्धतियां एवं सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
5. मंगल, एस.के. (2008).शिक्षा मनोविज्ञान, प्रिंटिस हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट, नई दिल्ली
6. अस्थाना, बिपिन, अस्थाना, श्वेता (2007). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
7. पाठक, पी.डी. (2007).शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
8. गुप्ता, एस.पी., गुप्ता अलका (2007).उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
9. पाठक, पी. डी. (2007).शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
10. शर्मा, गणपतराम, व्यास हरिश्चन्द्र(2007).अधिगम-शिक्षण और मनोसामाजिक आधार, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर.
11. भाटिया, के. के. (2006).शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मनोविज्ञान, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना
12. अरोड़ा रीता, मारवाह सुदेश (2006).शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर
13. अस्थाना, मधु एवं वर्षा, किरन बाला (2012).व्यक्तित्व मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 221009
14. श्री वास्तव, डी.एन. एवं श्री वास्तव वी.एन. (2015). आधुनिक विकासात्मक मनोविज्ञान, श्रीविनोद पुस्तक मंदिर आगरा
15. विद्यालंकार, जगदीश (1990).भारतीय मनोविज्ञान, राधा पब्लिकेशन्स
16. पाण्डेय, के.पी. (1985).मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, दुआबा हाऊस, दिल्ली
17. स्कीनर, सी. ई. (1972).शिक्षा मनोविज्ञान के तत्त्व, उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ